



TAJAUŁ MUNTJA ANSARI

25 Aug 1954

04:33 AM

Gaya

Model: Web-MyKundli

Order No: 121750601

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

लिंग _____: पुल्लिंग
जन्म तिथि _____: 24-25/08/1954
दिन _____: मंगल-बुधवार
जन्म समय _____: 04:33:00 घंटे
इष्ट _____: 57:43:26 घटी
स्थान _____: Gaya
राज्य _____: Bihar
देश _____: India

अक्षांश _____: 24:48:00 उत्तर
रेखांश _____: 85:00:00 पूर्व
मध्य रेखांश _____: 82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार _____: 00:10:00 घंटे
ग्रीष्म संस्कार _____: 00:00:00 घंटे
स्थानिक समय _____: 04:43:00 घंटे
वेलान्तर _____: -00:02:29 घंटे
साम्पातिक काल _____: 02:53:43 घंटे
सूर्योदय _____: 05:27:37 घंटे
सूर्यास्त _____: 18:16:58 घंटे
दिनमान _____: 12:49:21 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन) _____: दक्षिणायन
सूर्य स्थिति(गोल) _____: उत्तर
ऋतु _____: शरद
सूर्य के अंश _____: 07:59:43 सिंह
लग्न के अंश _____: 25:03:26 कर्क

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति _____: कर्क - चन्द्र
राशि-स्वामी _____: मिथुन - बुध
नक्षत्र-चरण _____: पुनर्वसु - 2
नक्षत्र स्वामी _____: गुरु
योग _____: व्यतिपात
करण _____: तैतिल
गण _____: देव
योनि _____: मार्जार
नाड़ी _____: आद्य
वर्ण _____: शूद्र
वश्य _____: मानव
वर्ग _____: मार्जार
युँजा _____: मध्य
हंसक _____: वायु
जन्म नामाक्षर _____: को-कोमल
पाया(राशि-नक्षत्र) _____: लौह - रजत
सूर्य राशि(पाश्चात्य) _____: कन्या

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

पंचांग

दादा का नाम _____ :
पिता का नाम _____ :
माता का नाम _____ :
जाति _____ :
गोत्र _____ :

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1876	भाद्रपद	3
पंजाबी	संवत : 2011	भाद्रपद	10
बंगाली	सन् : 1361	भाद्रपद	9
तमिल	संवत : 2011	आवनी	9
केरल	कोल्लम : 1130	चिंगम	9
नेपाली	संवत : 2011	भाद्रपद	10
चैत्रादि	संवत : 2011	भाद्रपद	कृष्ण 12
कार्तिकादि	संवत : 2011	श्रावण	कृष्ण 12

पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि _____ : 11
तिथि समाप्ति काल _____ : 16:53:03
जन्म तिथि _____ : 12
सूर्योदय कालीन नक्षत्र _____ : आर्द्रा
नक्षत्र समाप्ति काल _____ : 17:43:39 घंटे
जन्म योग _____ : पुनर्वसु
सूर्योदय कालीन योग _____ : सिद्धि
योग समाप्ति काल _____ : 27:20:54 घंटे
जन्म योग _____ : व्यतिपात
सूर्योदय कालीन करण _____ : बालव
करण समाप्ति काल _____ : 16:53:03 घंटे
जन्म करण _____ : तैतिल
भयात _____ : 27:03:24
भभोग _____ : 59:47:40
भोग्य दशा काल _____ : गुरु 8 वर्ष 8 मा 23 दि

घात चक्र

मास _____ : आषाढ़
तिथि _____ : 2-7-12
दिन _____ : सोमवार
नक्षत्र _____ : स्वाति
योग _____ : परिघ
करण _____ : कौलव
प्रहर _____ : 3
वर्ग _____ : मूषक
लग्न _____ : कर्क
सूर्य _____ : मीन
चन्द्र _____ : कुम्भ
मंगल _____ : मेष
बुध _____ : मकर
गुरु _____ : वृष
शुक्र _____ : मिथुन
शनि _____ : कुम्भ
राहु _____ : कर्क

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

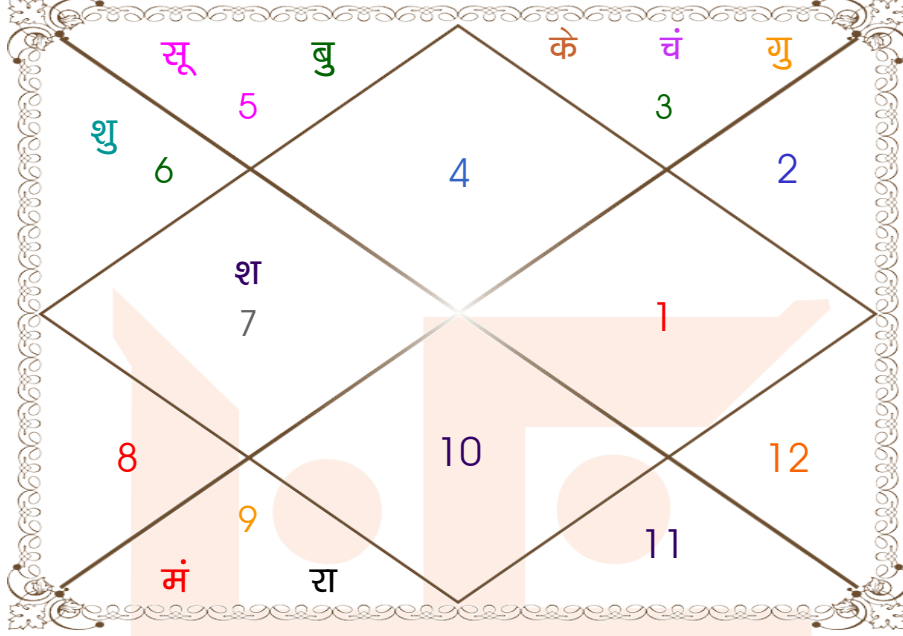
लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

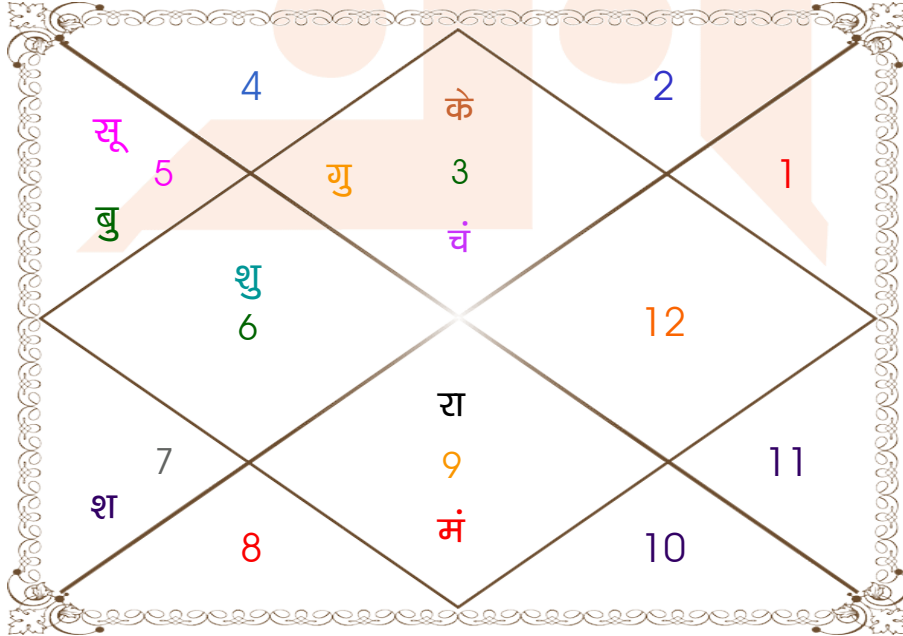
9835195382

जन्म कुण्डली

लग्न कुण्डली



चन्द्र कुण्डली



ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

			के चं गु
			ल
			बु सू
रा मं		श	शु

लग्न कुंडली

के गु	चं		
	ल		
सू बु		श	मं रा

विंशोत्तरी
गुरु 8वर्ष 8मा 23दि
गुरु

25/08/1954

19/05/2067

गुरु	19/05/1963
शनि	19/05/1982
बुध	19/05/1999
केतु	19/05/2006
शुक्र	19/05/2026
सूर्य	18/05/2032
चन्द्र	19/05/2042
मंगल	18/05/2049
राहु	19/05/2067

योगिनी

पिंगला 1वर्ष 1मा 2दि
पिंगला

27/09/2025

27/09/2027

पिंगला	06/11/2025
धान्या	06/01/2026
भामरी	28/03/2026
भद्रिका	08/07/2026
उल्का	07/11/2026
सिद्धा	29/03/2027
संकटा	07/09/2027
मंगला	27/09/2027

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

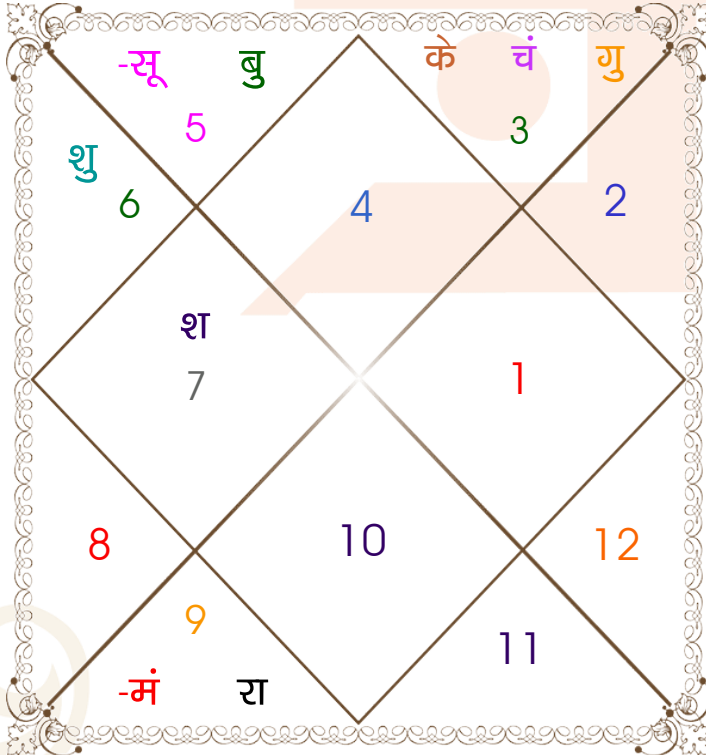
ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			कर्क	25:03:26	316:27:50	आश्लेषा	3	9	चंद्र	बुध	राहु	---
सूर्य			सिंह	07:59:43	00:57:54	मघा	3	10	सूर्य	केतु	गुरु	मूलत्रिकोण
चंद्र			मिथु	26:03:25	13:23:18	पुनर्वसु	2	7	बुध	गुरु	केतु	मित्र राशि
मंगल			धनु	06:54:05	00:19:26	मूल	3	19	गुरु	केतु	राहु	मित्र राशि
बुध	अ		सिंह	11:06:59	01:56:00	मघा	4	10	सूर्य	केतु	शनि	मित्र राशि
गुरु			मिथु	27:06:25	00:11:45	पुनर्वसु	3	7	बुध	गुरु	शुक्र	शत्रु राशि
शुक्र			कन्या	23:45:05	01:02:03	चित्रा	1	14	बुध	मंगल	मंगल	नीच राशि
शनि			तुला	11:19:23	00:04:26	स्वाति	2	15	शुक्र	राहु	शनि	उच्च राशि
राहु	व		धनु	20:43:09	00:00:39	पूर्वाषाढा	3	20	गुरु	शुक्र	गुरु	नीच राशि
केतु	व		मिथु	20:43:09	00:00:39	पुनर्वसु	1	7	बुध	गुरु	गुरु	नीच राशि
हर्ष			कर्क	02:25:41	00:03:09	पुनर्वसु	4	7	चंद्र	गुरु	राहु	---
नेप			तुला	00:43:20	00:01:31	चित्रा	3	14	शुक्र	मंगल	बुध	---
प्लूटो			सिंह	01:40:14	00:01:55	मघा	1	10	सूर्य	केतु	शुक्र	---
दशम भाव			मेष	22:40:27	--	भरणी	--	2	मंगल	शुक्र	शनि	--

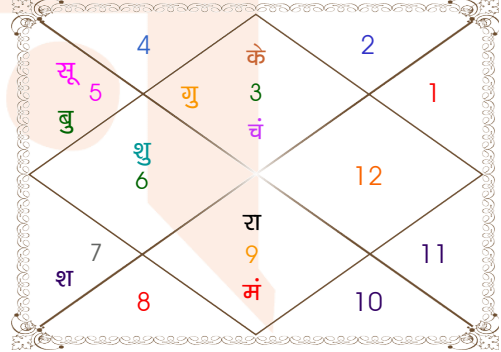
व - वकी स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:13:43

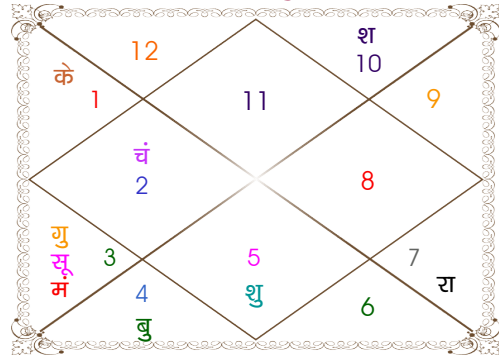
लग्न-चलित



चन्द्र कुंडली



नवमांश कुंडली



ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि	भाव मध्य
1	कर्क 09:39:36	कर्क 25:03:26
2	सिंह 09:39:36	सिंह 24:15:46
3	कन्या 08:51:57	कन्या 23:28:07
4	तुला 08:04:17	तुला 22:40:27
5	वृश्चिक 08:04:17	वृश्चिक 23:28:07
6	धनु 08:51:57	धनु 24:15:46
7	मकर 09:39:36	मकर 25:03:26
8	कुम्भ 09:39:36	कुम्भ 24:15:46
9	मीन 08:51:57	मीन 23:28:07
10	मेष 08:04:17	मेष 22:40:27
11	वृष 08:04:17	वृष 23:28:07
12	मिथुन 08:51:57	मिथुन 24:15:46

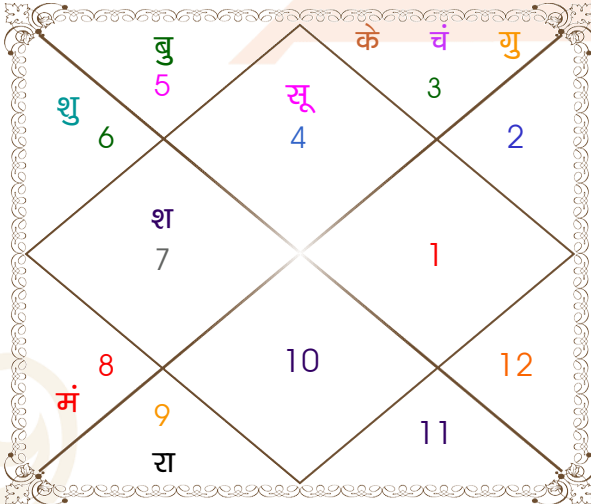
निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	कर्क	25:03:26
2	सिंह	20:53:16
3	कन्या	20:27:50
4	तुला	22:40:27
5	वृश्चिक	24:59:20
6	धनु	25:50:09
7	मकर	25:03:26
8	कुम्भ	20:53:16
9	मीन	20:27:50
10	मेष	22:40:27
11	वृष	24:59:20
12	मिथुन	25:50:09

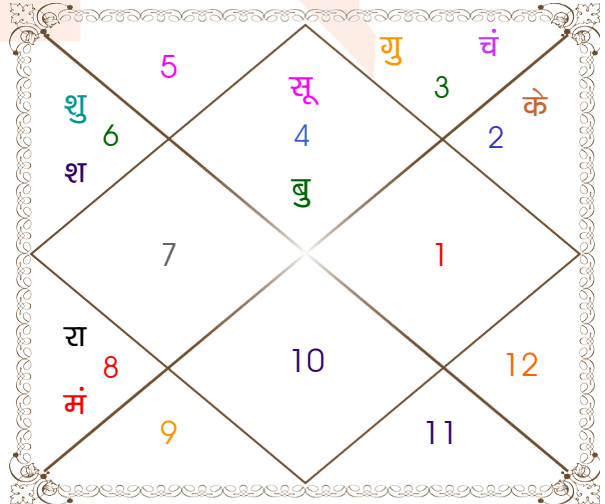
तारा चक्र

जन्म	सम्पत्	विपत्	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति
विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा
पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा

चलित कुंडली



भाव कुंडली



ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : गुरु 8 वर्ष 8 मास 23 दिन

गुरु 16 वर्ष	शनि 19 वर्ष	बुध 17 वर्ष	केतु 7 वर्ष	शुक्र 20 वर्ष
25/08/1954	19/05/1963	19/05/1982	19/05/1999	19/05/2006
19/05/1963	19/05/1982	19/05/1999	19/05/2006	19/05/2026
00/00/0000	शनि 22/05/1966	बुध 14/10/1984	केतु 15/10/1999	शुक्र 17/09/2009
00/00/0000	बुध 29/01/1969	केतु 12/10/1985	शुक्र 14/12/2000	सूर्य 17/09/2010
25/08/1954	केतु 10/03/1970	शुक्र 11/08/1988	सूर्य 21/04/2001	चंद्र 18/05/2012
केतु 31/03/1955	शुक्र 09/05/1973	सूर्य 18/06/1989	चंद्र 20/11/2001	मंगल 18/07/2013
शुक्र 29/11/1957	सूर्य 21/04/1974	चंद्र 17/11/1990	मंगल 18/04/2002	राहु 18/07/2016
सूर्य 17/09/1958	चंद्र 21/11/1975	मंगल 15/11/1991	राहु 07/05/2003	गुरु 19/03/2019
चंद्र 17/01/1960	मंगल 29/12/1976	राहु 03/06/1994	गुरु 12/04/2004	शनि 19/05/2022
मंगल 23/12/1960	राहु 05/11/1979	गुरु 08/09/1996	शनि 21/05/2005	बुध 19/03/2025
राहु 19/05/1963	गुरु 19/05/1982	शनि 19/05/1999	बुध 19/05/2006	केतु 19/05/2026

सूर्य 6 वर्ष	चंद्र 10 वर्ष	मंगल 7 वर्ष	राहु 18 वर्ष	गुरु 16 वर्ष
19/05/2026	18/05/2032	19/05/2042	18/05/2049	19/05/2067
18/05/2032	19/05/2042	18/05/2049	19/05/2067	00/00/0000
सूर्य 05/09/2026	चंद्र 19/03/2033	मंगल 15/10/2042	राहु 30/01/2052	गुरु 06/07/2069
चंद्र 07/03/2027	मंगल 18/10/2033	राहु 02/11/2043	गुरु 24/06/2054	शनि 17/01/2072
मंगल 13/07/2027	राहु 19/04/2035	गुरु 08/10/2044	शनि 30/04/2057	बुध 24/04/2074
राहु 05/06/2028	गुरु 18/08/2036	शनि 17/11/2045	बुध 18/11/2059	केतु 25/08/2074
गुरु 25/03/2029	शनि 19/03/2038	बुध 14/11/2046	केतु 05/12/2060	00/00/0000
शनि 07/03/2030	बुध 18/08/2039	केतु 12/04/2047	शुक्र 06/12/2063	00/00/0000
बुध 11/01/2031	केतु 18/03/2040	शुक्र 12/06/2048	सूर्य 30/10/2064	00/00/0000
केतु 19/05/2031	शुक्र 17/11/2041	सूर्य 17/10/2048	चंद्र 30/04/2066	00/00/0000
शुक्र 18/05/2032	सूर्य 19/05/2042	चंद्र 18/05/2049	मंगल 19/05/2067	00/00/0000

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल गुरु 8 वर्ष 9 मा 4 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शुक्र - केतु 19/03/2025 19/05/2026	सूर्य - सूर्य 19/05/2026 05/09/2026	सूर्य - चंद्र 05/09/2026 07/03/2027	सूर्य - मंगल 07/03/2027 13/07/2027	सूर्य - राहु 13/07/2027 05/06/2028
केतु 12/04/2025 शुक्र 22/06/2025 सूर्य 14/07/2025 चंद्र 18/08/2025 मंगल 12/09/2025 राहु 15/11/2025 गुरु 11/01/2026 शनि 19/03/2026 बुध 19/05/2026	सूर्य 24/05/2026 चंद्र 02/06/2026 मंगल 09/06/2026 राहु 25/06/2026 गुरु 10/07/2026 शनि 27/07/2026 बुध 12/08/2026 केतु 18/08/2026 शुक्र 05/09/2026	चंद्र 20/09/2026 मंगल 01/10/2026 राहु 29/10/2026 गुरु 22/11/2026 शनि 21/12/2026 बुध 16/01/2027 केतु 26/01/2027 शुक्र 26/02/2027 सूर्य 07/03/2027	मंगल 14/03/2027 राहु 03/04/2027 गुरु 20/04/2027 शनि 10/05/2027 बुध 28/05/2027 केतु 04/06/2027 शुक्र 26/06/2027 सूर्य 02/07/2027 चंद्र 13/07/2027	राहु 31/08/2027 गुरु 14/10/2027 शनि 05/12/2027 बुध 20/01/2028 केतु 09/02/2028 शुक्र 03/04/2028 सूर्य 20/04/2028 चंद्र 17/05/2028 मंगल 05/06/2028
सूर्य - गुरु 05/06/2028 25/03/2029	सूर्य - शनि 25/03/2029 07/03/2030	सूर्य - बुध 07/03/2030 11/01/2031	सूर्य - केतु 11/01/2031 19/05/2031	सूर्य - शुक्र 19/05/2031 18/05/2032
गुरु 14/07/2028 शनि 30/08/2028 बुध 10/10/2028 केतु 27/10/2028 शुक्र 15/12/2028 सूर्य 29/12/2028 चंद्र 23/01/2029 मंगल 09/02/2029 राहु 25/03/2029	शनि 19/05/2029 बुध 07/07/2029 केतु 27/07/2029 शुक्र 23/09/2029 सूर्य 10/10/2029 चंद्र 08/11/2029 मंगल 28/11/2029 राहु 19/01/2030 गुरु 07/03/2030	बुध 20/04/2030 केतु 08/05/2030 शुक्र 28/06/2030 सूर्य 14/07/2030 चंद्र 09/08/2030 मंगल 27/08/2030 राहु 13/10/2030 गुरु 23/11/2030 शनि 11/01/2031	केतु 19/01/2031 शुक्र 09/02/2031 सूर्य 15/02/2031 चंद्र 26/02/2031 मंगल 05/03/2031 राहु 25/03/2031 गुरु 11/04/2031 शनि 01/05/2031 बुध 19/05/2031	शुक्र 19/07/2031 सूर्य 06/08/2031 चंद्र 06/09/2031 मंगल 27/09/2031 राहु 21/11/2031 गुरु 08/01/2032 शनि 06/03/2032 बुध 27/04/2032 केतु 18/05/2032
चंद्र - चंद्र 18/05/2032 19/03/2033	चंद्र - मंगल 19/03/2033 18/10/2033	चंद्र - राहु 18/10/2033 19/04/2035	चंद्र - गुरु 19/04/2035 18/08/2036	चंद्र - शनि 18/08/2036 19/03/2038
चंद्र 13/06/2032 मंगल 30/06/2032 राहु 15/08/2032 गुरु 25/09/2032 शनि 12/11/2032 बुध 25/12/2032 केतु 12/01/2033 शुक्र 03/03/2033 सूर्य 19/03/2033	मंगल 31/03/2033 राहु 02/05/2033 गुरु 30/05/2033 शनि 03/07/2033 बुध 02/08/2033 केतु 15/08/2033 शुक्र 19/09/2033 सूर्य 30/09/2033 चंद्र 18/10/2033	राहु 08/01/2034 गुरु 22/03/2034 शनि 17/06/2034 बुध 02/09/2034 केतु 04/10/2034 शुक्र 04/01/2035 सूर्य 31/01/2035 चंद्र 18/03/2035 मंगल 19/04/2035	गुरु 22/06/2035 शनि 08/09/2035 बुध 16/11/2035 केतु 14/12/2035 शुक्र 04/03/2036 सूर्य 28/03/2036 चंद्र 08/05/2036 मंगल 05/06/2036 राहु 18/08/2036	शनि 17/11/2036 बुध 07/02/2037 केतु 13/03/2037 शुक्र 17/06/2037 सूर्य 16/07/2037 चंद्र 02/09/2037 मंगल 06/10/2037 राहु 01/01/2038 गुरु 19/03/2038

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र
लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382
9835195382

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांक से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	7
भाग्यांक	7
मित्र अंक	2, 3, 6, 7
शत्रु अंक	4, 5, 8
शुभ वर्ष	25,34,43,52,61
शुभ दिन	मंगल, सोम, गुरु
शुभ ग्रह	मंगल, चन्द्र, गुरु
मित्र राशि	कन्या, कुम्भ
मित्र लग्न	तुला, मीन, वृष
अनुकूल देवता	गणेश
शुभ रत्न	मोती
शुभ उपरत्न	चन्द्रमणि
भाग्य रत्न	पुखराज
शुभ धातु	रजत
शुभ रंग	श्वेत
शुभ दिशा	पश्चिमोत्तर
शुभ समय	संध्या
दान पदार्थ	शंख, कपूर, श्वेतचन्दन
दान अन्न	चावल
दान द्रव्य	दही

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

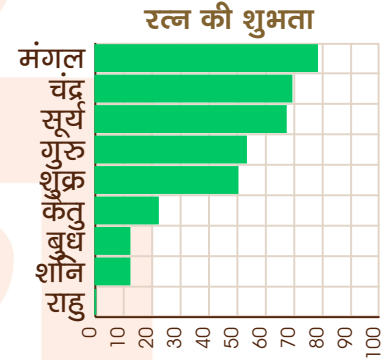
9835195382

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
मूंगा	मंगल	78%	शत्रु व रोग मुक्ति, व्यावसायिक उन्नति, सन्तति सुख
मोती	चंद्र	69%	कम खर्च, स्वास्थ्य
माणिक्य	सूर्य	67%	धन
पुखराज	गुरु	53%	कम खर्च, शत्रु व रोग मुक्ति, भाग्योदय
हीरा	शुक्र	50%	पराक्रम, धनार्जन, सुख
लहसुनिया	केतु	22%	व्यय, धन हानि
पन्ना	बुध	12%	धन हानि, व्यय, पराक्रम हानि
नीलम	शनि	12%	ग्रह कलेश, दाम्पत्य कष्ट, दुर्घटना
गोमेद	राहु	0%	शत्रु व रोग, व्यय



दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
गुरु	19/05/1963	74%	75%	84%	0%	66%	25%	12%	0%	22%
शनि	19/05/1982	55%	56%	66%	25%	53%	56%	38%	0%	0%
बुध	19/05/1999	74%	56%	78%	38%	53%	56%	12%	0%	22%
केतु	19/05/2006	55%	56%	84%	12%	53%	56%	0%	0%	47%
शुक्र	19/05/2026	55%	56%	78%	25%	53%	62%	25%	0%	34%
सूर्य	18/05/2032	80%	75%	84%	12%	59%	25%	0%	0%	0%
चंद्र	19/05/2042	74%	81%	78%	25%	53%	50%	12%	0%	0%
मंगल	18/05/2049	74%	75%	91%	0%	59%	50%	12%	0%	34%
राहु	19/05/2067	55%	56%	66%	12%	53%	56%	25%	9%	0%

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

प्रथम चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	02/02/1961-17/09/1961	08/10/1961-27/01/1964	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	28/04/1971-10/06/1973	-----	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	10/06/1973-23/07/1975	-----	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	23/07/1975-07/09/1977	-----	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	04/11/1979-15/03/1980	27/07/1980-06/10/1982	-----

द्वितीय चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	21/03/1990-20/06/1990	15/12/1990-05/03/1993	15/10/1993-10/11/1993
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	07/06/2000-23/07/2002	08/01/2003-07/04/2003	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	23/07/2002-08/01/2003	07/04/2003-06/09/2004	13/01/2005-26/05/2005
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	06/09/2004-13/01/2005	26/05/2005-01/11/2006	10/01/2007-16/07/2007
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	10/09/2009-15/11/2011	16/05/2012-04/08/2012	-----

तृतीय चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	24/01/2020-29/04/2022	12/07/2022-17/01/2023	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	08/08/2029-05/10/2029	17/04/2030-31/05/2032	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	31/05/2032-13/07/2034	-----	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	13/07/2034-27/08/2036	-----	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	22/10/2038-05/04/2039	13/07/2039-28/01/2041	06/02/2041-26/09/2041

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
अष्टम स्थानस्थ ढैया	शुभ	दम्पति
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	शुभ	धनार्जन
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	अशुभ	कम खर्च
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	अशुभ	बुरा स्वास्थ्य
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	शुभ	पराक्रम

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ॐ हौं जूं सः ॐ भूर्भुव स्वः ॐ ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डन्ट बनाकर धारण करें।

ॐ शं शनैश्चराय नमः ।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।
स्त्री भर्तुर्विनाशंच भर्ता च स्त्री विनाशनम् ।**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

आपके जन्म समय में मंगल चन्द्रकुंडली में सप्तम भाव में स्थित है अतः आप एक मांगलिक पुरुष है। चूंकि आपकी कुंडली में मांगलिक दोष भंग नहीं हो रहा है अतः इसके प्रभाव से आपकी पत्नी का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा तथा स्वभाव में भी उग्रता का भाव रहेगा जिससे यदा कदा परस्पर संबंधों में मतभेद उत्पन्न होंगे लेकिन ये अल्पकालिक रहेंगे तथा दाम्पत्य जीवन पर इसका कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ेगा। साथ ही आप पित या गर्मी आदि से यदा कदा परेशानी की अनुभूति कर सकते हैं। मंगल के प्रभाव से आपके विवाह में न्यूनाधिक विलम्ब होने की संभावना रहेगी तथा विवाह पूर्व किसी वार्ता में गतिरोध उत्पन्न हो सकता है लेकिन अंततोगत्वा आपको सफलता मिलेगी। दाम्पत्य जीवन सामान्यतया संतोषप्रद रहेगा।

सप्तम भावस्थ मंगल के प्रभाव से आपका शारीरिक स्वास्थ्य मध्यम रहेगा। यदा कदा मानसिक परेशानी भी हो सकती है। दशम भाव पर मंगल की दृष्टि से आप अपने कार्य क्षेत्र में परिश्रम तथा पराक्रम से सफलता अर्जित करेंगे। समाज से भी आपको न्यूनाधिक मात्रा में मान सम्मान प्राप्त होता रहेगा। लग्न पर दृष्टि के प्रभाव से स्वभाव में तेजस्विता का भाव रहेगा जिससे यदा कदा क्रोध के भाव की प्रबलता दृष्टि गोचर होगी। द्वितीय भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से पारिवारिक सुख शान्ति एवं समृद्धि मध्यम रहेगी तथा यदा कदा पारिवारिक जनों के मध्य मतभेद भी उत्पन्न होंगे जिससे परिवार की शान्ति भी प्रभावित होगी परन्तु इसका कोई विशेष दुष्प्रभाव आपके पारिवारिक जीवन में नहीं होगा।

अतः अपने दाम्पत्य जीवन को अधिक खुशहाल एवं सुखी बनाने के लिए आपको किसी ऐसी मांगलिक कन्या से विवाह करना चाहिए जिसके द्वारा आपका मंगली दोष भंग हो सके। इसके लिए कन्या की कुंडली में मांगलिक भावों अर्थात् प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम एवं द्वादश भाव में शनि तथा राहु जैसे पापग्रहों की स्थिति होनी चाहिए। इस प्रकार दोष के भंग होने

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

पर आपके अशुभ फलों में न्यूनता आएगी तथा सुख सौभाग्य एवं ऐश्वर्य की वृद्धि होगी। आपका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा साथ ही परस्पर संबंधों में भी मधुरता रहेगी।



ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। अतः इस योग से ग्रसित जातकों के लिए आवश्यक है कि वे इस काल सर्प योग का निदान करा लें। जिससे कि कुंडली के शुभ योगों के फल पूर्णयता मिलते रहें।

द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

यदि लग्न कुंडली में सभी सातों ग्रह राहु से केतु के मध्य में हो लेकिन अंशानुसार कुछ ग्रह राहु केतु की धुरी से बाहर हों तो आंशिक काल सर्प योग कहलाता है। यदि कोई एक ग्रह राहु-केतु की धुरी से बाहर हो तो भी आंशिक काल सर्प योग बनता है।

यदि राहु से केतु तक सभी भावों में कोई न कोई ग्रह स्थित हो तो यह योग पूर्ण रूप से फलित होता है। यदि राहु-केतु के साथ सूर्य या चंद्र हो तो यह योग अधिक प्रभावशाली होता है। यदि राहु, सूर्य व चंद्र तीनों एक साथ हो तो ग्रहणकाल सर्प योग बनता है। इसका फल हजार गुना अधिक हो जाता है। ऐसे जातक को काल सर्प योग की शांति करवाना अति आवश्यक होता है।

काल सर्प योग का प्रभाव

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं।

काल सर्प योग के औपचारिक उपाय के द्वारा इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है। जन्मपत्रिका के अनुसार जब-जब राहु एवं केतु की महादशा, अंतर्दशा आदि

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

आती है तब तब यह योग असर दिखाता है। गोचर में राहु व केतु का जन्मकालिक राहु-केतु व चंद्र पर भ्रमण भी इस योग को सक्रिय कर देता है। उस समय विशेष ध्यान देकर पूजा अर्चनादि श्रद्धा विश्वास के साथ करें, अवश्य लाभ होगा। कालसर्प योग यंत्र के सम्मुख 43 दिन तक सरसों के तेल का दीया जलाने से भी इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मकुण्डली में महापद्म नामक कालसर्प योग विद्यमान है। फलस्वरूप जातक प्रेम प्रसंग में असफल रहता है। प्रियपात्र एवं स्त्री का विरह सहन करना पड़ता है। पत्नी मनोनुकूल नहीं मिलती है। परिणामस्वरूप वैवाहिक जीवन दुःखमय व्यतीत होता है। घर में सुख शान्ति का अभाव रहता है।

इस योग के कारण जातक को समय-समय पर रोग व्याधि ग्रसित करता रहता है। जातक चाहे कितना ही इलाज करा ले, पर रोग प्रायः ठीक नहीं होता है। इसमें अधिक धन खर्च हो जाने के कारण आर्थिक स्थिति असामान्य हो जाती है। अर्थात् आर्थिक संकट जातक को घेर लेता है।

इस योग के कारण जातक यात्रा बहुत करता पर उसमें सफलता नहीं मिलती है। मन में निराशा की भावना जागृत हो उठती है एवं जातक अपने मन में शत्रुता भी पालकर रखने वाला होता है और जातक के अनेक शत्रु भी होते हैं। वे सब षड्यन्त्र रचते रहते हैं, जिसमें शत्रुओं को ही सफलता मिलती है। परिणामस्वरूप जातक को नुकसान मिलता है और कभी कारावास की सजा भी भोगना पड़ती है। जातक का आत्मबल कमजोर रहता है और चन्द्रमा के प्रभावित होने के कारण जीवन मानसिक रूप से अशान्त रहता है।

इसके प्रभाव से जातक का चरित्र संदेहास्पद हो जाता है। धर्म की हानि होती है। जीवन पर्यन्त दुःख, शोक आदि से घिरा रहता है। जातक समय-समय पर बुरा स्वप्न भी देखता है। वृद्धावस्था कष्टप्रद होती है।

इस योग के प्रभावित व्यक्ति को कदापि थलसेना में नहीं जाना चाहिए। लेकिन इतना सब कुछ होने के बाद भी जातक के जीवन में एक अच्छा समय आता है और जातक एक अच्छा दलील देने वाला एवं वकालत करने वाला तथा राजनीति के क्षेत्र में सफलता प्राप्त करने वाला होता है।

यदि आप कभी उपरोक्त परेशानी महसूस करते हैं तो निम्नलिखित उपाय करें। अवश्य लाभ मिलेगा।

1. काल सर्प दोष निवारण यंत्र घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें।
2. 16 सोमवार का व्रत करें।
3. राहु मन्त्र का 18000(अठारह हजार) उनकी महादशा, अन्तर्दशा में करें या करवायें।
4. शुभ मुहूर्त में अभिमन्त्रित गोमेद धारण करें।
5. सवा महीने जौ के दाने पक्षियों को खिलाएँ।
6. नव नाग स्तोत्र का एक वर्ष तक प्रतिदिन पाठ करें।

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

7. श्रावण मास में 30 दिन तक महादेव का अभिषेक करें।
8. तिरुपति बालाजी के समीप कालहस्ती शिवमन्दिर में जाकर कालसर्प योग की शान्ति का उपाय विधि-विधान से एक बार करें।
9. श्रद्धापूर्वक पितरों का प्रतिवर्ष श्राद्धपक्ष में श्राद्ध करें। कम से कम सात वर्ष तक अवश्य करें।
10. सरस्वती जी की एक वर्ष तक विधिवत उपासना करें।
11. गोमेद, तिल, सरसों, कम्बल, खड़्ग, नीलवस्त्र, शूर्प आदि समय समय पर दान करें।
12. देवदारु, सरसों तथा लोहवान को उबालकर राहु की महादशा या अन्तर दशा आदि में सवा महीने तक स्नान करें।
13. शुभ मुहूर्त में नागपाश यन्त्र को अभिमन्त्रित कर धारण करें।
14. शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठे) शनिवार से यह व्रत आरंभ करना चाहिए। यह व्रत 18 करें। काला वस्त्र धारण करके 18 या 3 बीज मन्त्र की माला जपें। तदन्तर एक बर्तन में जल, दूर्वा और कुश लेकर पीपल की जड़ में डालें। भोजन में मीठा चूरमा, मीठी रोटी समयानुसार रेवड़ी, भुग्गा, तिल के बने मीठे पदार्थ सेवन करें और यही दान में भी दें। रात को घी का दीपक जलाकर पीपल की जड़ में रख दें।
15. शुभ मुहूर्त में मुख्य द्वार पर चाँदी का स्वास्तिक एवं दोनो ओर धातु से निर्मित नाग चिपका दें।
16. मंगलवार एवं शनिवार को रामचरितमानस के सुन्दरकाण्ड का 108 बार पाठ श्रद्धापूर्वक करें।

विशेष

ध्यान रखें कालसर्पयोग का पूजन केवल श्रीखण्ड चन्दन से करें। कुंकुम, सिन्दूर, रोली आदि का प्रयोग न करें। तिरुपति बालाजी के पास कालाहस्ती शिव मंदिर में जाकर कालसर्प योग की शांति का उपाय विधि-विधान से एक बार करें अथवा 12 ज्योतिर्लिंग में से किसी भी ज्योतिर्लिंग में जाकर पूजा करें जैसे - कि सौराष्ट्र गुजरात में सोमनाथ मंदिर, महाराष्ट्र के नासिक में त्रयंबकेश्वर मंदिर, उज्जैन, भीमाशंकर, नागेश्वर, रामेश्वर, वगैरे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरान्त पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।

नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ॥

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृों का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- पंचम भाव के स्वामी पर शनि और राहु का प्रभाव है।
- नवम भाव के स्वामी पर राहु का प्रभाव है।
- लग्नेश द्वादश भाव में स्थित है और उस पर राहु का प्रभाव है।

आपकी कुण्डली में चन्द्र, मंगल और गुरु के कारण पितृदोष है।

आपकी कुण्डली में चंद्र पितृदोष कारक ग्रह है अतः माता के पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ सोमवार को प्रतिदिन शिवलिंग पर कच्चा दूध व जल चढ़ाएं साथ ही शिव पंचाक्षरी “ॐ नमः शिवाय” का मंत्र जाप करें। दुर्गा, शिव या पार्थिवेश्वर महादेव का पूजन करें। ढाक की समिधा व जड़ी-बूटियों से हवन करे तथा गौ-दान करें।

आपकी कुण्डली में मंगल पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी पुरुष सदस्य द्वारा क्रोधवश किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ आपको नौकर, छोटे भाईयों को दान देना चाहिए।

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

आपकी कुंडली में वृहस्पति पितृदोष कारक ग्रह है अतः दादाजी द्वारा किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ आप विद्वानजनों, वृद्ध ब्राह्मण और पति को दान दें। विद्यालय में पुस्तकों का दान करें।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह सूर्यबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

ग्रह फल

सूर्य

द्वितीय भाव में सूर्य हो तो जातक भाग्यवान्, सम्पत्तिवान्, मुखरोगी, झगड़ालू, नेत्रकर्णदन्तरोगी, राजभीरु, घरेलू जीवन दुःखी एवं स्त्री के लिए कुटुम्बियों से झगड़ने वाला होता है।

सिंह राशि में रवि हो तो जातक सत्संगी पुरुषार्थी, योगाभ्यासी, वनविहारी, क्रोधी, गम्भीर, उत्साही, तेजस्वी एवं धैर्यशाली होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य द्वितीय भाव में है। अतः आपके पिता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा अल्प मात्रा में शारीरिक दुर्बलता की अनुभूति होती रहेगी। आपके प्रति उनका प्रेम भाव रहेगा तथा विद्यार्जन एवं धनार्जन संबंधी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको पूर्ण सहायता तथा सहयोग प्रदान करते रहेंगे। साथ ही वे समय समय पर आपको आर्थिक सहयोग भी प्रदान करेंगे।

आप भी उनका हार्दिक सम्मान तथा आदर करेंगे एवं यत्नपूर्वक उनकी सेवा करने के लिए भी तत्पर रहेंगे। उनकी आज्ञा का पालन करना आप अपना कर्तव्य समझेंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा मतभेद होने से विवाद आदि की स्थिति भी उत्पन्न होगी परन्तु कुछ समय पश्चात सब कुछ ही ठीक हो जाएगा।

चन्द्र

बारहवें भाव में चन्द्रमा हो तो जातक मृदुभाषी, चिन्ताशील, एकात्प्रिय, क्रोधी, कफरोगी, चंचल, नेत्ररोगी एवं अधिक व्यय करने वाला होता है।

मिथुन राशि में चन्द्रमा हो तो जातक विद्वान्, अध्ययनशील, सुन्दर, रतिकुशल, भोगी, मर्मज्ञ, नेत्र चिकित्सक, अच्छा वक्ता एवं अच्छा अन्तर्ज्ञान वाला होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति द्वादश भाव में है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य सामान्य अच्छा रहेगा तथा यदा कदा कष्टों का भी सामना करना पड़ेगा। लेकिन आपके प्रति उनके मन में वात्सल्य का भाव रहेगा तथा जीवन में आपको प्रायः यथाशक्ति अपना सहयोग प्रदान करती रहेंगी। आप उनसे अच्छे तथा पुण्य के कार्यों के प्रति प्रवृत्त होंगे तथा समयानुसार दानादि को भी उन्हीं के कथनानुसार सम्पन्न करेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति आदर का भाव रहेगा एवं उनकी आज्ञा का पालन आप कुछ अवसरों को छोड़कर करते रहेंगे। आपके परस्पर संबंध विशेष मधुर नहीं होंगे क्योंकि आप में काफी मतभेद रहेंगे तथापि सांसारिक संबंधों में कोई तनाव नहीं रहेगा एवं सामंजस्य पूर्वक आप के परस्पर व्यवहार चलते रहेंगे। साथ ही उन्हें कष्ट के समय आप अपनी ओर से पूर्ण सहयोग तथा सहायता अवश्य प्रदान करेंगे।

मंगल

छटेभाव में मंगल हो तो जातक बलवान्, धैर्यशाली, प्रबल जठराग्नि, कुलवन्त, प्रचण्ड शक्ति, शत्रुहन्ता, ऋणी, दादरोगी, कोधी, पुलिस अफसर, व्रण और रक्तविकार युक्त एवं अधिकव्यय करने वाला होता है।

धनु राशि में मंगल हो तो जातक चतुर राजनैतिक नेता, कम सन्तान, लोकप्रिय प्रसिद्ध, उच्चप्रशासकीय पद प्राप्त करने वाला, कठोर, शठ, क्रूर, परिश्रमी एवं पराधीन होता है।

आपके जन्म समय में मंगल छटे भाव में है अतः भाईयों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं समय समय पर वे शारीरिक रूप से अस्वस्थ रहेंगे। धन सम्पत्ति का उनके पास अभाव नहीं रहेगा एवं आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह एवं सम्मान का भाव रहेगा। जीवन में वे समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों तथा क्षेत्र में आपको अपना वांछित सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे एवं अपनी ओर से आपको किसी भी प्रकार से कष्ट नहीं होने देंगे। साथ ही शत्रुवर्ग से भी वे आपकी नित्य रक्षा करने में तत्पर रहेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह का भाव रहेगा एवं हमेशा उनको अपना सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे। आपकी आपसी संबंध मधुर रहेंगे तथा यदा कदा सामान्य रूप से मतभेद भी उत्पन्न होंगे जिससे संबंधों में क्षणिक तनाव की स्थिति रहेगी परन्तु कुछ समय के उपरान्त स्वतः ही सब कुछ ठीक हो जाएगा। इसके साथ ही आप सुख दुःख में उनकी वांछित आर्थिक तथा अन्य प्रकार से भी सहयोग देंगे एवं यत्नपूर्वक उनकी भलाई करने में तत्पर रहेंगे।

बुध

द्वितीयभाव में बुध हो तो जातक सुखी, सुन्दर, वक्ता, साहसी, सत्कार्यकारक, संधी, दलाल या वकील का पेशा करने वाला, मिष्टाभभोजी, गुणी एवं मितव्ययी होता है।

सिंह राशि में बुध हो तो जातक मिथ्याभाषी, कुकर्मी, ठग, कामुक, भ्रमणशील, अभिमानी, वक्ता, कम उम्र में विवाह, आवेशपूर्ण स्वभाव एवं सरकारी नौकर होता है।

गुरु

द्वादश भाव में गुरु हो तो जातक मितभाषी, योगाभ्यासी, परोपकारी, उदार, आलसी, सुखी, मितव्ययी, शास्त्रज्ञ, सम्पादक, लोभी, यात्री एवं दुष्ट चित्तवाला होता है।

मिथुन राशि में गुरु हो तो जातक योग्य वक्ता, सुगठित शरीर, लम्बाकद, उदार, विद्वान, कई भाषाओं का जानने वाला, अनायास धनप्राप्त करने वाला, लोकमान्य, लेखक एवं व्यवहार कुशल होता है।

शुक्र

तृतीय भाव में शुक्र हो तो जातक विद्वान्, कलाकार, आलसी, कृपण, धनी, सुखी, पराकामी, भाग्यवान्, बहने भाईयों से अधिक एवं पर्यटनशील होता है।

कन्या राशि में शुक्र हो तो जातक, सुखी, भोगी, अतिकामी, सभापण्डित, रोगी, वीर्यहीन, सट्टे द्वारा धननाशक एवं अवैध सम्बन्ध रखने वाला होता है।

शनि

चतुर्थभाव में शनि हो तो जातक अपयशी, बलहीन, धूर्त, कपटी, शीघ्रकोपी, कृशदेही, उदासीन, वातपित्तयुक्त एवं भाग्यवान् होता है।

तुला राशि में शनि हो तो जातक राजनीति में रुचि रखने वाला, प्रसिद्धनेता, धनी, सम्मानित शक्तिशाली, दानशील, परस्त्रियों में रुचि, सुभाषी, यशस्वी, स्वाभिमानी एवं उन्नतिशील होता है।

राहु

षष्ठभाव में राहु हो तो जातक शत्रुहन्ता, कमरदर्द पीड़ित, अरिष्टनिवारक, विदेशियों से लाभ, पराकामी, बड़े-बड़े कार्य करनेवाला, दीर्घायु, साहसी, धनी एवं प्रसिद्ध होता है।

धनु राशि में राहु हो तो जातक प्रारम्भिक जीवन में सुखी, दत्तक जाने वाल एवं मित्र द्रोही होता है।

केतु

बारहवें भाव में केतु हो तो जातक चंचल बुद्धि, धूर्त, ढग तांत्रिक, अतव्ययी निर्बल स्वास्थ्य, पागलपन, मोक्ष प्राप्ति, अविश्वासी एवं जनता को भूल-प्रेतों की जानकारी द्वारा ढगने वाला होता है।

मिथुन राशि में केतु हो तो जातक वायुरोग से पीड़ित, अभिमानी सरलता से सन्तुष्ट होने वाला, अल्पायु एवं छोटी सी बात पर क्रोधित हो जाने वाला होता है।

दशा विश्लेषण

महादशा :- शुक्र
(19/05/2006 - 19/05/2026)

आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा 19/05/2006 को आरम्भ होकर 19/05/2026 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 20 वर्ष है।

आपकी जन्म कुण्डली में शुक्र तृतीय भाव में स्थित है। यह एक शुभ ग्रह है जिसकी सामान्यतया दो राशियाँ- बृष और तुला हैं। यह मीन राशि में उच्च का तथा कन्या राशि में निम्न का होता है। यह आनन्द, प्रेम-संबंध, स्वाद, फैशन डिजाइनिंग तथा जीवन के आनन्द का द्योतक है। यह आपकी कुण्डली में तृतीय भाव में स्थित है तथा नवम भाव पर इसकी दृष्टि है और इस भाव पर अपना शुभ प्रभाव डाल रहा है।

तृतीय भाव मानसिकता, बुद्धि, साहस, दृढ़ता, छोटे भाई-बहनों, छोटी यात्रा, गमनागमन, पत्राचार, अफवाह, हाथ, गले, कन्धों, हँसली तथा स्नायु तंत्र का द्योतक है।

स्वास्थ्य :

तृतीय भाव में स्थित महादशा स्वामी शुक्र भाव को प्रबलित कर रहा है और इसके फलस्वरूप स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं का सामना करने में साहस की प्राप्ति होगी। आपको कोई बड़ी या मामूली स्वास्थ्य समस्या नहीं होगी और इस दशा के दौरान आपका जीवन सामान्य रहेगा।

अर्थ-संपत्ति :

शुक्र के कारण आपको समृद्धि तथा संपत्ति की प्राप्ति होगी और आपमें कठिनाइयों का सामना करने का साहस उत्पन्न होगा। इस दशा के दौरान आपको कुछ अचल संपत्ति प्राप्त होने की संभावना है और आप भोग-विलास तथा आराम संबंधी वस्तुओं पर व्यय करेंगे। आपको उपलब्धियों की प्राप्ति और संपत्ति की वृद्धि में बाधा आएगी तथा आपके ऊपर ऋण का बोझ पड़ सकता है या नुकसान हो सकता है जिसके लिए आपको आवश्यक सावधानी बरतनी चाहिए।

व्यवसाय :

आपकी मानसिक शक्ति अच्छी है इसलिए आप संगीत, गायन, नृत्य और ललित कला का आनन्द लेंगे। आप नाटकीय गतिविधियों या ललित कला से संबंधित गतिविधियों से धनोपार्जन और जीवन का आनन्द प्राप्त करेंगे। आप व्यावसायिक दृष्टि से सुदृढ़ हैं और अपने पिता के व्यवसाय में शामिल हो सकते हैं क्योंकि आपकी जन्म कुण्डली में तृतीय भाव में स्थित शुक्र की दृष्टि नवम् भाव पर है।

पारिवारिक जीवन :

आपका पारिवारिक जीवन सौहार्द्रपूर्ण होगा क्योंकि आपके जीवन साथी आपके सहायक होंगे। आपको बड़ों का आशीर्वाद मिलेगा किन्तु अपने भाई-बहनों के साथ मतभेद भी

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

हो सकता है जिससे परिवार में तनाव उत्पन्न होगा।



ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

महादशा :- सूर्य
(19/05/2026 - 18/05/2032)

सूर्य की महादशा 19/05/2026 को आरम्भ होगी और 6 वर्ष की अवधि के बाद 18/05/2032 को समाप्त होगी। आपकी जन्मकुण्डली में सूर्य द्वितीय भाव में स्थित है। सूर्य सम्पत्ति, दृष्टि परिवार, प्रभुत्व तथा पिता का प्रतिनिधित्व करता है जबकि द्वितीय भाव दृष्टि, परिवार (कुटुम्ब) तथा सम्पत्ति का द्योतक है। अतः इस दशा में आप सम्पत्ति, सम्मान, ख्याति, शक्ति तथा प्रभुत्व प्राप्त करेंगे। आपके अनेक मित्र होंगे।

स्वास्थ्य :

इस दशा की अवधि में आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आप नेत्र-रोग तथा दाँत की समस्याओं से पीड़ित हो सकते हैं किन्तु ये रोग क्षणिक हैं। इस महा दशा में आपमें ऊर्जस्विता और शक्ति प्रचुर मात्रा में विद्यमान रहेगी।

अर्थ :

धन की प्राप्ति के लिये, खासकर सरकारी धन की प्राप्ति के लिए, यह दशा उत्तम है। आप धनी होंगे और धीरे-धीरे जीवन में सुदृढ़ स्थिति प्राप्त कर लेंगे। ताम्बे, सोने तथा अन्य

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

धातुओं के व्यापार से धन-लाभ का अच्छा अवसर आपको प्राप्त होगा। आप स्वभाव से उदार हैं, जिससे आपको धन संग्रह में रुकावट आएगी। किन्तु, सिंह राशि में होने के कारण आपकी आमदनी स्थायी होगी। आप भूमि और सम्पत्ति के स्वामी हो सकते हैं।

व्यवसाय :

आपको सरकार से अधिकार, सम्मान तथा आदर प्राप्त होंगे। आप शक्तिशाली तथा स्वतंत्र हैं, और आप में नेतृत्व-क्षमता विद्यमान है। किसी के अधीन कार्य करना आपके लिये कठिन होगा। आप नेतृत्व का कार्य बखूबी करेंगे। आपमें आत्मविश्वास और जोखिम उठाने की क्षमता विद्यमान है। आप प्रशासकीय कार्यों के सम्पादन में प्रवीण होंगे। आपकी राजनीति में दिलचस्पी होगी। आपको सरकार तथा सम्भ्रान्त व्यक्तियों से प्रतिष्ठा मिलेगी। आप सोने और रत्नों का व्यवसाय कर सकते हैं और यदि नौकरीपेशा हों तो सम्पत्ति के रक्षक या वित्त, लेखा अथवा प्रशासन के प्रभारी पदधिकारी हो सकते हैं। नौकरीपेशा लोगों को उच्चाधिकारियों का अनुग्रह प्राप्त होगा, उनकी पदोन्नति होगी और कार्य-स्थान में एक सौहार्द्रपूर्ण वातावरण मिलेगा। आपको अतिरिक्त आर्थिक लाभ हो सकता है। विधिवेत्ता, चिकित्सक तथा ज्योतिषी क्षेत्र आपके लिए उपयुक्त हैं।

कुटुम्ब :

आपको सारी सुख-सुविधाएं मिलेंगी। आप स्वभाव से सामाजिक हैं इसलिए आपके मित्रों की संख्या बड़ी होगी। आपको आपके परिवार से सुख मिलेगा। आप अत्यंत आशावादी तथा उत्साही होंगे। आप अपने शत्रुओं को परास्त करने में सक्षम होंगे और आपकी प्रवृत्ति साहसी होगी। आपकी माता के लिये यह समय हर तरह से लाभदयक है। आपके पिता की कार्य-क्षेत्र में स्थिति अनुकूल होगी और वह अपने प्रतिद्वन्द्वियों को अचम्भित करने में सक्षम होंगे। आपके छोटे भाई-बहन की यात्रा होगी, उनका धन व्यय होगा और वे विदेश यात्रा पर भी जा सकते हैं। आपके बड़े भाई-बहनों को अचल धन-सम्पत्ति की प्राप्ति होगी।

शिक्षा :

इस दशा के दौरान आपकी शिक्षा उच्च कोटि की तथा शैक्षिक वृत्ति उत्तम होगी। आप वाद-विवादों, भाषण-कला तथा प्रतियोगिताओं आदि में सफल होंगे। आप भौतिकी, विद्युत-अभियन्त्रण, औषधि आदि से सम्बन्धित कार्य सफलतापूर्वक सम्पादित कर सकते हैं।

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

**अंतर्दशा :- सूर्य - सूर्य
(19/05/2026 - 05/09/2026)**

आपके लिए सूर्य की महादशा 19/05/2026 को प्रारंभ हो रही है। इस महादशा में पहली अंतर्दशा सूर्य की होगी जिसकी अवधि 3 मास 18 दिन होकर 05/09/2026 को समाप्त होगी। अंतर्दशा का स्वामी सूर्य पिता, अधिकार, शक्ति, नाम, प्रसिद्धि, ऊर्जा और आत्मा का कारक है।

इस अंतर्दशा में आप स्वयं के पुरुषार्थ द्वारा धन का संचय करेंगे। भौतिक सुख साधनों और विलासिता के उपकरणों का संचय करेंगे। सरकार और अधिकारीगणों से लाभ प्राप्त करेंगे। ज्ञान-विज्ञान में आपकी प्रतिभा और रुचि में वृद्धि होगी। विज्ञान से संबंधित कार्य से जुड़ने की संभावना है। शत्रुओं पर तर्कशक्ति से विजय प्राप्त होगी क्योंकि आप वाक्शक्ति के धनी हैं।

आपको आशा से अधिक धन प्राप्त हो सकता है। जीवनसाथी के परिवार से मतभेद की आशंका को नकारा नहीं जा सकता। नौकरी में लगे व्यक्तियों के लिए समय भाग्यशाली रहेगा। व्यापारी और बुद्धिजीवी समृद्ध बनेंगे। संतान के लिए यह भाग्यशाली समय है। वे शिक्षा में खूब उन्नति करेंगे। धन कमाने में किस्मत साथ देगी, मगर उदार प्रकृति के कारण खुलकर खर्च भी करेंगे।

माता के लिए समय लाभप्रद रहेगा। जायदाद से पर्याप्त लाभ होगा।

आखों के रोग और गले की खराश के विरुद्ध सावधानी आवश्यक है। छोटे-मोटे कष्टों से बचाव के लिए लाल वस्त्र, लाल चंदन, गेहूं और घी का दान रविवार के दिन करें।

**अंतर्दशा :- सूर्य - चन्द्र
(05/09/2026 - 07/03/2027)**

आपकी सूर्य की महादशा 19/05/2026 को प्रारंभ हुई थी। इसमें दूसरी अंतर्दशा चंद्रमा की होगी जिसकी अवधि 6 मास है और यह 07/03/2027 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी चंद्र मस्तिष्क, घर, माता और सौंदर्य का कारक है।

इस अवधि में आप किसी ऐसे काम को करना पसंद करेंगे जिसमें जनता की नज़रों से दूर रहकर कर्मठ और निस्वार्थ भाव से काम कर सकें। प्राच्यविद्या में आपकी रुचि होगी। दान-पुण्य आदि पर धन खर्च होगा। सेवारत जातकों को कार्यालय के कर्मचारियों का सहयोग प्राप्त होगा। व्यापारीगण खूब लाभ कमाएंगे। सलाहकारों के कार्य में मामूली परिवर्तन हो सकता है।

भाई-बहनों का भाग्य उत्तम रहेगा। उनके आपके साथ संबंध मधुर रहेंगे। जीवनसाथी को स्वास्थ्य संबंधी मामूली समस्या हो सकती है।

शोधकर्ताओं के लिए समय सौभाग्यशाली है। एकांत में किया गया कार्य

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

शुभफलप्रदाता होगा। आपकी माता के लिए समय शुभ है। आपको पैतृक संपत्ति प्राप्त हो सकती है। संतान के कार्यों में प्रगति होगी। आपको नेत्र और हाथ-पैरों के मामूली रोग हो सकते हैं। शुभत्व की वृद्धि हेतु श्वेत वस्तुओं का दान करें।

**अंतर्दशा :- सूर्य - मंगल
(07/03/2027 - 13/07/2027)**

आपकी सूर्य की महादशा 19/05/2026 को प्रारंभ हो रही है। इसमें तृतीय अंतर्दशा मंगल की है जिसकी अवधि 4 मास 6 दिन है। यह अंतर्दशा 13/07/2027 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी मंगल साहस, ऊर्जा और भाइयों का कारक है।

इस अवधि में आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आप सक्रिय और ऊर्जावान रहेंगे तथा मानसिक या शारीरिक बाधाओं को दृढ़ता से पार करेंगे। आपको प्रसिद्धि और सफलता की प्राप्ति होगी। प्रतिस्पर्धा में भाग लेने के लिए यह उत्तम समय है। विरोधी या प्रतिद्वंद्वी आपको हानि नहीं पहुंचा सकेंगे।

आपकी संतान बहुत सक्रिय और ऊर्जावान होगी। वे खेलकूद में भाग लेंगे। जीवनसाथी या व्यापार में साझेदार का अप्रत्याशित खर्चा हो सकता है। माता में उत्साह और ऊर्जा रहेंगे। पिता को सत्ता और अधिकार प्राप्त होंगे। आपका खर्चा बढ़ सकता है। वाहन खरीद/बेच सकते हैं। बड़े भाई-बहनों के जीवन में परिवर्तन हो सकता है। मामा पक्ष के लोग भाग्यशाली रहेंगे।

सेवारत जातकों के लिए समय भाग्यशाली है। व्यापारियों को ऋण प्राप्त हो सकता है या ओवरड्राफ्ट सुविधा मिल सकती है।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। फोड़े-फुंसी, ज्वर आदि हो सकते हैं। शुभत्व में वृद्धि के लिए हनुमान चालीसा का पाठ करें।

**अंतर्दशा :- सूर्य - राहु
(13/07/2027 - 05/06/2028)**

आपके लिए सूर्य की महादशा 19/05/2026 को प्रारंभ हुई थी। इसमें चतुर्थ अंतर्दशा राहु की होगी। यह 13/07/2027 को प्रारंभ होकर 05/06/2028 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी राहु भौतिक सुख, दादा और तीर्थयात्रा का कारक है।

इस अवधि में आपका स्वास्थ्य उत्तम होगा। विरोधियों और शत्रुओं पर विजयी रहेंगे। मुकदमे में जीत होगी। यात्राएं होंगी, विदेश भी जा सकते हैं। अप्रत्याशित खर्च बढ़ सकते हैं। कार्यों और प्रतिस्पर्धा में सफल रहेंगे। जीवनसाथी के खर्च बढ़ सकते हैं। आपके पिता को विदेशियों से संपर्क द्वारा लाभ होगा। माता की इच्छाएं पूर्ण होंगी। भाई-बहनों के जीवन में परिवर्तन आएंगे, अप्रत्याशित घटनाएं घटेंगी, मगर धन का लाभ होगा। आपकी संतान भाग्यशाली रहेगी, उनकी शिक्षा में उन्नति होगी। अगर वे सेवारत हैं तो घर से बाहर जा सकते हैं।

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र
लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382
9835195382

अगर आप सेवारत हैं तो बहुत भाग्यशाली रहेंगे। सरकार या उच्चाधिकारियों से लाभ होगा। व्यापारियों का समय भी उत्तम रहेगा। परामर्शदाताओं के प्रयास फलीभूत होंगे। राजनीतिज्ञ भी खूब उन्नति करेंगे।

फोड़ा, घाव, दांतों की मामूली समस्याओं के प्रति सावधान रहें। शुभत्व में वृद्धि के लिए राहु मंत्र का जाप करें।

ॐ रां राहवे नमः

अंतर्दशा :- सूर्य - गुरु (05/06/2028 - 25/03/2029)

आपके लिए सूर्य की महादशा 19/05/2026 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में बृहस्पति की अंतर्दशा 9 मास 18 दिन की रहेगी। यह 05/06/2028 को प्रारंभ होकर 25/03/2029 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बृहस्पति धन, संतान और धर्म का कारक है।

इस अवधि में आपकी कई यात्राएं हो सकती हैं। धन का संचय हो सकता है मगर शुभ कार्यों पर खर्चा भी होगा। धर्म-अध्यात्म में रुचि होगी। बहुत से सराहनीय कार्य करेंगे। सफलता बाधाओं के बाद ही मिलेगी। शत्रुओं पर विजय होगी; स्वास्थ्य उत्तम होगा। पारिवारिक सुख मिलेगा, माता-पिता से तसल्ली मिलेगी। पिता से कुछ संपत्ति मिल सकती है। वाहन प्राप्त हो सकता है। जायदाद से किराया और आमदनी बढ़ेंगे। नयी जायदाद क्रय कर सकते हैं। अप्रत्याशित लाभ हो सकता है। दानी बन सकते हैं।

आपके जीवनसाथी को स्वास्थ्य संबंधी समस्या हो सकती है। उनकी विरोधियों पर विजय होगी, कार्य में अच्छे अवसर मिलेंगे, धन का लाभ होगा। आपके पिता की अचल संपत्ति में वृद्धि हो सकती है; उन्हें अप्रत्याशित धन प्राप्त हो सकता है। माता को लाभ होगा, स्वास्थ्य बेहतर होगा, यात्राएं होंगी। भाई-बहनों के धन में वृद्धि होगी। आपकी संतान शोधकार्य में सफल हो सकती है। उन्हें स्वास्थ्य का ध्यान रखना चाहिए। कभी-कभी निराश हो सकते हैं।

अगर आप सेवारत हैं तो धन कमाएंगे। परामर्शदाता स्वयं को संगठित करेंगे ; उनकी आय उत्तम रहेगी। व्यापारियों को लाभ अधिक, हानि कम रहेंगे।

नेत्र, कान, जिगर के रोगों से बचें। शुभत्व में वृद्धि हेतु विष्णुजी की पूजा करें।

अंतर्दशा :- सूर्य - शनि (25/03/2029 - 07/03/2030)

आपकी सूर्य की महादशा जारी है। इसमें छठी अंतर्दशा शनि की है जिसकी अवधि 11 मास 12 दिन है। आपके लिए यह 25/03/2029 को प्रारंभ होगी और 07/03/2030 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शनि आयु, संन्यास और दार्शनिक स्वभाव का कारक है।

इस अवधि में माता के साथ आपके संबंध मधुर रहेंगे। आर्थिक स्थिति सुदृढ़ रहेगी। माता-पिता से लाभ और सम्मान प्राप्त होंगे। जमीन-जायदाद से युक्त रहेंगे। सरकार से

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र
लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382
9835195382

सहयोग मिलेगा। रोगनिरोधक क्षमता उत्तम होगी। शत्रुओं पर विजय होगी। मामा या ममेरे भाइयों से लाभ होगा। उत्तम स्वास्थ्य, उच्चपद और लोकप्रियता के योग हैं।

आपके जीवनसाथी को लाभ होगा और कार्यक्षेत्र में प्रगति करेंगे। आपको ससुराल से लाभ होगा। माता की आर्थिक स्थिति उत्तम होगी और वे अचल संपत्ति क्रय कर सकती हैं। भाई-बहनों के लिए उच्चपद और रोगनिरोधक क्षमता का संकेत है। आपकी संतान को परीक्षा में उत्तम अंक लाने के लिए कठोर परिश्रम करना होगा। इस मामले में उनसे आपका विवाद हो सकता है।

अगर आप सेवारत हैं तो कठोर परिश्रम और धन का योग है। परामर्शदाता सफलता और धन अर्जित करेंगे। व्यापारीगण उत्साह से भरपूर रहेंगे, लाभ कमाएंगे।

अंतर्दशा :- सूर्य - बुध (07/03/2030 - 11/01/2031)

आपकी सूर्य की महादशा 19/05/2026 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में सातवीं अंतर्दशा बुध की है जिसकी अवधि 10 मास 6 दिन रहेगी। यह 07/03/2030 को प्रारंभ होकर 11/01/2031 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बुध बुद्धिमत्ता, शिक्षा, वाणी का कारक है।

इस अवधि में आपको मित्रों से लाभ होगा। दिया हुआ कर्ज वापस मिलेगा। व्यापार, जमीन, जायदाद आदि से धन मिलेगा। लेखन, एजेंसी, कमीशन कार्य आदि में सफलता मिलेगी। ज्ञान, विज्ञान, चिंतन में आपकी रुचि रहेगी और सफलता, संपन्नता प्राप्त होगी। शत्रुओं पर विजय मिलेगी। दूसरों की जमीन, जायदाद, अमानत की देखभाल से सम्मान मिल सकता है। मुकदमें में सफलता मिलेगी। विवाह या साझेदार के माध्यम से धन मिल सकता है। जीवनसाथी को धनप्राप्ति होगी। पिता सुख-शांति से रहेंगे और धन कमाएंगे। माता के लिए उनकी मित्र सुखकारी होंगी। बड़े भाई-बहनों को गृहसुख और समृद्धि मिलेंगे। छोटे भाई-बहन शुभकार्यों पर धन व्यय करेंगे और यात्राएं करेंगे। आपकी संतान को स्पर्धा और परीक्षा में सफलता मिलेगी, लेखनकार्य से धन और प्रसिद्धि का लाभ मिलेगा।

सेवारत जातकों की यात्राएं होंगी; कार्यालय के कार्य और विचारों के आदान-प्रदान में सफल रहेंगे। परामर्शदाताओं को लाभ होगा और सकारात्मक कार्य करने के अवसर प्राप्त होंगे। व्यापारियों को निवेश से लाभ होगा।

आपका स्वास्थ्य संतोषजनक रहेगा। नेत्ररोग, त्वचा विशेषतः, चेहरे की समस्याओं, स्मरणशक्ति के हास के विरुद्ध सावधान रहें। अशुभता से बचने के लिए मूंग की दाल दान करें।